अधिगम की सामाजिक सांस्कृतिक प्रक्रिया (Socio- Cultural Process of Learning) — शिक्षा समाज में रहने वाले व्यक्तियों के सम्पूर्ण जीवन एवं व्यवहारों से सम्बन्धित ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने की प्रक्रिया है। वास्तव में यह प्रक्रिया केवल वर्तमान से ही सम्बन्धित नहीं होती बल्कि इसका सम्बन्ध भविष्य से भी है। यही कारण है कि शिक्षा सामाजिक निधि को सुरक्षित रखने का एक साधन है, जिसके बल एवं आधार पर प्रत्येक पीढ़ी अपना सुधार एवं सम्बर्द्धन करती रहती है और अन्त में उन्नति के पथ पर अग्रसर होती है।

शिक्षा आधुनिक समय में विकास की प्रक्रिया से तात्पर्य रखती है; अतः विकास और शिक्षा दोनों को एक ही माना जाता है। विकास व्यक्ति तथा समाज दोनों का होता है क्योंकि बिना व्यक्ति के समाज की कल्पना करना असम्भव है और बिना समाज के व्यक्ति को वातावरण ही नहीं मिलता

Scanned with CamScanner

जिसमे वह अपना विकास करे।

अधिगम का सामाजिक कार्य उसकी सामाजिक संस्थाओं के द्वारा पूरा होता है। शिक्षा के द्वारा सामाजिक भावना की जागृति होती है। व्यक्ति समाज के कृत्यों मे भाग लेता है और सफलता के साथ उन्हे पूरा करता है। इसके मूल मे मनुष्य की सामाजिक भावना छिपी रहती है जो सामाजिक जीवन के लिए प्रेरणा एवं इच्छा से पूर्ण होती है। यही कारण है कि मनुष्य विभिन्न आर्थिक, राजनैतिक संस्थाए, विद्यालय, शिल्प संस्थाए आदि बनाता है।

अधिगम का एक महत्वपूर्ण कार्य सांस्कृतिक निधि की सुरक्षा एवं उसका पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरण है। मैथ्यू आर्नोल्ड के अनुसार समाज के व्यक्तियों के द्वारा जो कुछ उत्तम रूप से सोचा या जाना गया है संस्कृति है। इस विचार से संस्कृति के अन्तर्गत हमारे सभी उत्कृष्ट, बौद्धिक, भावात्मक एवं शारीरिक कार्य सम्मिलित किये जाते हैं। ज्ञान विज्ञान, कला और साहित्य व्यवहार और कौशल से संस्कृति को प्रकट करते हैं। "संस्कृति किसी समाज के जीवन की सम्पूर्ण रीति है।

Scanned with CamScanner

सामाजिक अधिगम (Social Learning)-

— सामाजिक अधिगम, अधिगम (सीखने) से सम्बन्धित एक सिद्धान्त है। दूसरे लोगो के व्यवहार को देखकर उससे सीखना सामाजिक अधिगम कहलाता है। सामाजिक अधिगम, व्यक्तिगत अधिगम या समूह अधिगम की अपेक्षा अधिक बड़े पैमाने पर होता है। इसके द्वारा व्यवहार में परिवर्तन हो भी सकता है और नही भी हो सकता है।

दूसरो को देखकर उनके अनुरूप व्यवहार करने के कारण अथवा दूसरों के व्यवहारों को अपने जीवन में उतारने तथा समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहारों को अपने जीवन मे धारण करने तथा अमान्य व्यवहारों को त्यागने के कारण ही यह सिद्धान्त सामाजिक अधिगम सिद्धान्त कहलाता है। इसी को बाण्डुरा का अनुकरण द्वारा व्यवहार मे रूपान्तरण का सिद्धान्त या सामाजिक अधिगम सिद्धान्त भी कहते है। बाण्डुरा के सामाजिक अधिगम को अवलोकन या निरीक्षणात्मक अधिगम (Observational Learning) भी कहते है। इस अधिगम के मुख्य बिन्दु इस प्रकार है।

Scanned with CamScanner

- सामाजिक अधिगम मे अधिगमकर्ता किसी प्रतिमान (आदर्श या माडल) को देखता और सुनता है।
- प्रतिमान द्वारा किये गये व्यवहार को अधिगमकर्ता ज्ञानात्मक प्रक्रियाओ द्वारा मास्तिक में संग्रहित करता है।
- बालक प्रतिमान द्वारा किये गये व्यवहार के परिणामो का निरीक्षण करता है।
- इसके बाद अधिगमकर्ता स्वयं प्रतिमान के व्यवहार का अनुकरण करके संवलीकरण (Reinforcement) की आशा करता है।
- पुनर्बलन (संवलीकरण) धनात्मक या ऋणात्मक हो सकता है। लोगो से धनात्मक पुष्टिकरण मिलने पर बालक उस व्यवहार को सीख लेता है और किसी व्यवहार के प्रति लोगो का नकारात्मक रुख होने पर उस व्यवहार को त्याग देता है।

Scanned with CamScanner

अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धान्त (Cognitive Principle of Learning) —

व्यवहारवाद उपागम मे अधिगम को विद्यार्थियो के प्रत्यक्ष व्यवहारो के रूप में देखा गया है, जबकि संज्ञानात्मक उपागम मे अधिगम को एक आन्तरिक मनोवैज्ञानिक वृत्ति अवबोधन, सम्प्रत्यय निर्माण, ध्यान, स्मृति तथा समस्या-समाधान के रूप मे समझा जाता है, इस उपागम मे विद्यार्थी सर्वप्रथम समस्या से सम्बन्धित सम्पूर्ण अवस्थिति / वस्तु का अवबोधन करता है; समस्या वस्तु के विभिन्न तत्वो मे एक सम्बन्ध ढूंढता है और तत्पश्चात समस्या के समाधान की कार्यनीति तैयार करता है।

Scanned with CamScanner

(i) – अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना मे परिवर्तन अन्तर्निहित है।

(ii) – अधिगम के लिए संज्ञानात्मक प्रयत्न तथा बोधात्मक विवेक (समझ) की आवश्यकता होती है।

अधिगम की संज्ञानात्मक अवधारणा (Concept of Cognitive Principle of Learning) – संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अन्तर्गत इस बात की विवेचना की जाती है कि व्यक्तियो मे स्वयं के प्रति तथा अपने वातावरण के प्रति विवेक किस प्रकार विकसित होता है और वे अपने वातावरण के सन्दर्भ मे कैसे कार्य करते है।

संज्ञानात्मक सिद्धान्तवादियों के अनुसार अध्यापन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थियो में तर्क या अन्तर्दृष्टि का विकास होता है। कक्षा सम्बन्धी अनुभवो को विद्यार्थी के व्यक्तिगत लक्ष्यो से सम्बन्धित कर दिया जाता है।

संज्ञानात्मक उपागम अधिगम मे बोध को बल व महत्व दिया जाता है। इस उपागम के अनुसार अधिगम एक जटिल प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप संज्ञानात्मक संरचना मे परिवर्तन आ जाते है अर्थात हम कह सकते है कि अधिगम संज्ञानात्मक संरचना मे आया परिवर्तन है। सामान्य रूप से ये परिवर्तन तीन प्रकार की प्रक्रियाओ द्वारा होते है। ये प्रक्रियाए है—

(1) विभेदीकरण (Decentralization)
(2) व्यापकीकरण (Elaboration)
(3) पुनर्संरचनीकरण (Re construction)

Scanned with CamScanner

विभेदीकरण मे व्यक्ति पहले स्वयं के और अपने वातावरण के विशिष्ट पहलुओ मे विभेदन करता है। उदाहरणार्थ, एक शिशु प्रत्येक पुरुष को अपना पिता समझता है। बाद मे वह पिता, भाई, चाचा, ताऊ इत्यादि मे भेद करना सीख जाता है। इस प्रकार संज्ञानात्मक संरचना अधिक विशिष्ट बन जाती है।

सामान्यीकरण में मूर्त एवं विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है और इनके आधार पर बच्चे व्यापकीकरण अथवा सामान्यीकरण करना सीख जाते है। अवधारणाओ में भेद करके बच्चा विभेदीकृत अवधारणाओ का उनके विशिष्ट गुणो के आधार पर वर्गीकरण करता है। इस प्रक्रिया को सामान्यीकरण कहते है। उदाहरण के लिए, बच्चा पहले विभिन्न आकृतियो जैसे - वृत, त्रिभुज, चतुर्भुज आदि का अन्तर समझता है तत्पश्चात इन विभेदीकृत अवधारणाओ की एक व्यापक अवधारणा बना लेता है - ज्यामिति। इस प्रकार विभिन्न अवधारणाओ का एकीकरण / व्यापकीकरण कहलाता है।

Scanned with CamScanner